

कोविड महामारी के दौरान नवजात और शिशु के लिए पशु दूध के वैकल्पिक प्रयोग संबंधी दिशानिर्देश

नवजात और 6 महीने से कम उम्र के शिशुओं के लिए केवल मां का दूध (या तो स्तनपान के रूप में या स्तन से निकला हुआ दूध) पिलाने की सलाह दी जाती है। अगर मां का दूध उपलब्ध नहीं है, तो डोनर ह्यूमन मिल्क (डीएचएम) दूसरा सबसे अच्छा विकल्प है। हालांकि, डीएचएम पूरे देश में व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं है। इसलिए, मां की बीमारी या मां की मृत्यु जैसी अपरिहार्य परिस्थितियों में, जब मां का अपना दूध या डीएचएम उपलब्ध नहीं होता है, पशु दूध पिलाना अगला विकल्प माना जा सकता है, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध, किफायती और सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से स्वीकार्य है।

यह याद रखना ज़रूरी है कि मां के दूध में मौजूद प्रतिरक्षा (एंटीबॉडीज़) और वृद्धि कारक तत्व पशु दूध में मौजूद नहीं होते हैं। इसलिए, पशु दूध केवल एक अस्थायी उपाय के रूप में माना जाना चाहिए और इसलिए जल्द से जल्द पुनः स्तनपान शुरू करने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए।

मां का दूध या डीएचएम न उपलब्ध होने की स्थिति में कई विकासशील देश नवजात शिशुओं और 6 माह से कम उम्र के शिशुओं के लिए विकल्प आहार के रूप में पशु दूध की सलाह देते हैं। मध्य और निम्न आय वाले देशों में, 6 महीने से कम उम्र के लगभग 10 प्रतिशत शिशुओं को पशु दूध पिलाया जाता है। इसलिए, पशु दूध शिशु आहार के लिए अस्थायी विकल्प के रूप में शामिल किया जा सकता है।

पशुओं के दूध में गाय और भैंस का दूध सबसे आम है। यह कच्चे दूध और पाश्चुरीकृत दूध के रूप में व्यापक रूप से उपलब्ध है। परंपरागत रूप से जानवरों के दूध को उबालकर पिलाया जाता है जो पाचन में मदद करता है और एलर्जी के खतरे को कम करता है।

जहां तक पशु दूध देने की बात है, तो स्थानीय रूप से उपलब्ध बिना मिलावट वाला पशु दूध उपयोग किया जा सकता है। यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि स्थानीय पशु दूध जैसे कि ताज़ा उबला दूध या पहले से पैकड दूध या पाश्चुरीकृत टॉड दूध या पाश्चुरीकृत गाय का दूध (जिसमें 3 प्रतिशत वसा, 3.1 प्रतिशत प्रोटीन और 58 किलो कैलोरी/100 मिलीलीटर है) प्रयोग में लाया जा सकता है।

यद्यपि पशु दूध 6 महीने से कम उम्र के शिशु की संपूर्ण पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूल नहीं है, इसलिए, पशु दूध प्राप्त करने वाले शिशुओं को अतिरिक्त रूप से मल्टी विटामिन और आयरन सप्लीमेंट देना चाहिए। मुख्य रूप से पशु दूध प्राप्त करने वाले शिशुओं के लिए मल्टीविटामिन्स आरडीए (रिकामेंडिड डायटरी एलाउंस) और आयरन सप्लीमेंट (2 मिलीग्राम/किग्रा एलिमेंटल आयरन) देने की सलाह दी जाती है।

पशु के दूध में पानी नहीं मिलाना चाहिए क्योंकि इससे उसके ज्यादा पतला होने का खतरा एवं संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि माताओं को सलाह दी जानी चाहिए कि वे गुर्दे के भार को कम करने के लिए 15–20 मिलीलीटर (3–4 चाय चम्मच) सुरक्षित पीने का पानी दें।

एक बच्चे को उसके शरीर के वजन के अनुसार पहले दिन औसतन 60मिली. दूध प्रति किग्रा. चाहिए होता है। जिसको हर रोज़ 20 मिली. प्रति दिन बढ़ाना चाहिए जिससे पहले हफ्ते में 150 मिली./किग्रा. प्रतिदिन दूध बच्चे को मिले। इससे बच्चे की उम्र अनुसार 6–8 बार में पिलाना चाहिए।

यह महत्वपूर्ण है कि पशु का दूध एक कप/पलदाई/चम्मच के साथ दिया जाए, जिसे साफ करना आसान होता है और मां के पुनः स्तनपान कराने की स्थिति में शिशु को स्तनपान करने में सहयोग करेगा। बोतल का उपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे दस्त और अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।